25-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

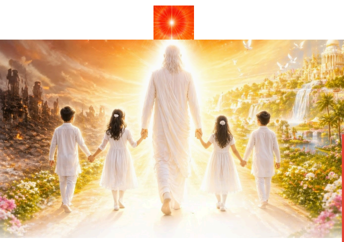

"मीठे बच्चे - बाप दूरदेश से आये हैं तुम बच्चों के लिए नया राज्य स्थापन करने, तुम अभी स्वर्ग के लायक बन रहे हो"

भगवान के सामने कोई भी तर्क नहीं देना है...
वो जो कहे उसमें हाँ बाबा, हाज़ीर बाबा, अभी बाबा...
That's All

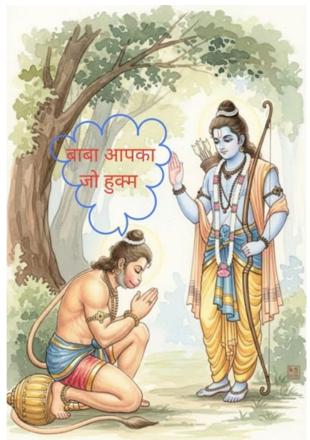

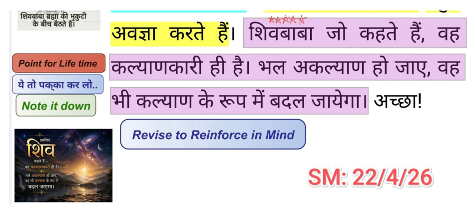

Refer two last pages for अटूट निश्चय

प्रश्नः- जिन बच्चों का शिवबाबा में अटूट निश्चय है उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:- वह ऑख बन्द करके बाबा की श्रीमत पर चलते रहेंगे, जो आज्ञा मिले। कभी ख्याल भी नहीं आयेगा कि इसमें कुछ नुकसान न हो जाए क्योंकि ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चों का रेसपान्सिबुल बाप है। उन्हें निश्चय का बल मिल जाता है। अवस्था अडोल और अचल हो जाती है।

जरा सोचो तो सही... स्वयं भगवान

Advantages

गीत:-तुम्हीं हो माता, तुम्हीं पिता हो.. Click

तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो।
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो।

तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो।
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो।

तुम्ही हो साथी तुम्ही सहारे।
कोई न अपना सिवा तुम्हारे।

तुम्ही हो साथी तुम्ही सहारे।
कोई न अपना सिवा तुम्हारे।

तुम्ही हो नैया तुम्ही खेवैया।
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो।

तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो।
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो।

जो खिल सके हैं वो फूल हम हैं।
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।

जो खिल सके हैं वो फूल हम हैं।
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।

दया की दृष्टि सदा ही रखना।
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो।

तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो।
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

चढ़ाओ नशा...

सोचो तुमको कौन मिला है,
कौन तुम्हारा साथी है।

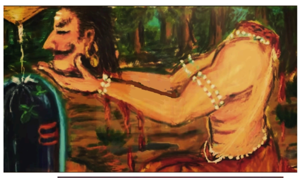

जिसको पाने के लिए लोग अपना गला भी उतार कर रखने को तैयार है..

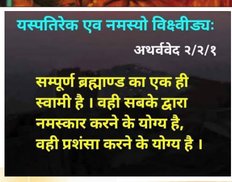

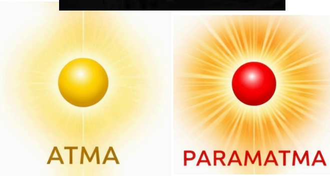

ओम् शान्ति। यह महिमा किसकी सुनी? जिसको सिवाए तुम बच्चों के दुनिया में और कोई जानते नहीं हैं। यह है ऊंच ते ऊंच बाप की महिमा। बाकी जिसकी भी महिमा करते हैं वह फालतू हो जाती है। ऊंच ते ऊंच एक ही बाप है। लेकिन बाप की पहचान कौन देवे। खुद (સ્વયં ભગવાન) आकर आत्मा की और अपनी पहचान देते हैं। (Mind It...) कोई भी मनुष्य को आत्मा की भी पहचान है नहीं। भल कहते हैं महान आत्मा, जीव आत्मा। शरीर जब छूट जाता है तो कहते - आत्मा निकल जाती है। शरीर मुर्दा हो जाता है। आत्मा अविनाशी है। वह कभी खत्म नहीं होती। आत्मा जो स्टार मिसल है, वह अति सूक्ष्म है। इन आंखों से देखने में नहीं आती है। कर्तव्य सब आत्मा करती है। परन्तु घड़ी-घड़ी देह-अभिमान में आ जाते हैं तो कहते हैं मैं फलाना हूँ, मैं यह करता हूँ। वास्तव में करती सब आत्मा है। शरीर तो आरगन्स हैं। यह साधू आदि भी जानते हैं कि आत्मा बहुत सूक्ष्म है, जो भ्रकुटी के बीच में रहती है। परन्तु उनको यह ज्ञान नहीं है कि आत्मा में यह पार्ट बजाने के संस्कार हैं। कोई कहते - आत्मा में

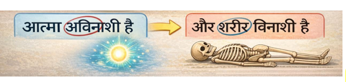

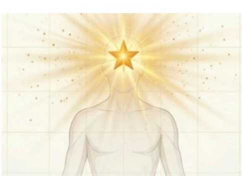

इस अति सूक्ष्म बिंदु

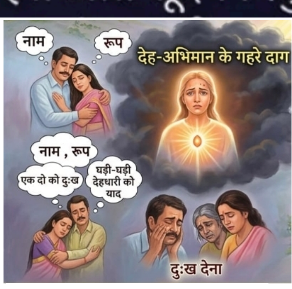

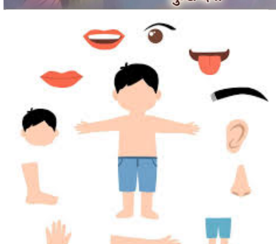

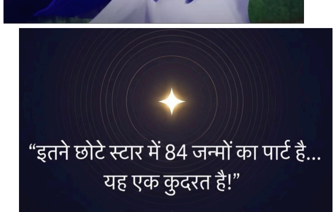

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

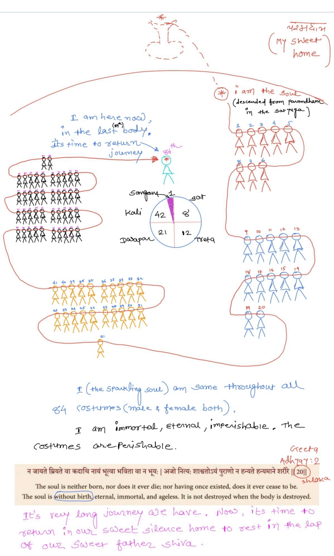

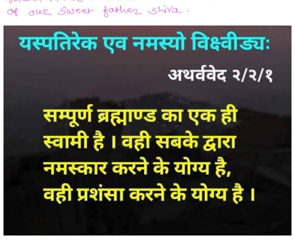

संस्कार होते नहीं, आत्मा निर्लेप है। कोई कहते - संस्कारों अनुसार जन्म मिलता है। मतभेद बहुत है। यह भी किसको पता नहीं कि कौन सी आत्मायें 84 जन्म लेती हैं। तुम जानते हो कि सूर्यवंशियों को ही 84 का चक्र लगाना पड़ता है। आत्मा ही 84 का चक्र लगाए पतित बनती है। उनको अब पावन कौन बनाये? पतित-पावन ऊंच ते ऊंच एक ही बाप है, उनकी महिमा सबसे ऊंच है। 84 जन्म सब तो नहीं लेते। पीछे आने वाले तो 84 जन्म ले न सकें। सब इकट्ठे तो नहीं आते हैं। जो पहले-पहले सतयुग में आयेंगे, सूर्यवंशी राजे और प्रजा, उन्हों के 84 जन्म होते हैं। पीछे तो मनुष्यों की बहुत वृद्धि होती है ना। फिर कोई के 83 कोई के 80 जन्म होते हैं। वहाँ सतयुग में तो पूरी 150 वर्ष आयु होती है। कोई जल्दी मर न सके। यह बातें बाप ही बैठ समझाते हैं। अब कोई परमपिता परमात्मा को नहीं जानते हैं। बाप कहते हैं कि जैसे तुम्हारी आत्मा है, वैसे मेरी भी आत्मा है। तुम सिर्फ जन्म मरण में आते हो, मैं नहीं आता हूँ। मुझे बुलाते भी तब हैं जब पतित बनते हैं। जब

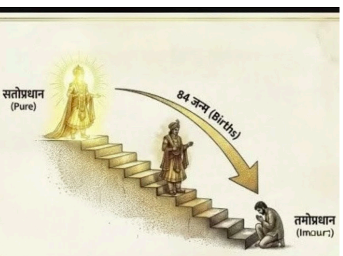

But we know, How Lucky & Great we are..!

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया॥ (गीता 4.6)

"मैं **अजन्मा** (जन्म न लेने वाला) और **अविनाशी** स्वरूप होते हुए भी तथा समस्त प्राणियों का ईश्वर होते हुए भी, अपनी प्रकृति (शक्ति) को वश में करके अपनी योगमाया से प्रकट होता हूँ।"

इस श्लोक की मुख्य बातें:

1. **अजोऽपि:** इसका अर्थ है 'अजन्मा'। भगवान कहते हैं कि उनका जन्म साधारण मनुष्यों की तरह कर्मों के अधीन नहीं होता।
2. **अव्ययात्मा:** वे कभी नष्ट नहीं होते (अमर हैं)।
3. **आत्ममायया:** वे अपनी इच्छा और दिव्य शक्ति (माया) से संसार में अवतार लेते हैं, न कि प्रकृति के नियमों के कारण।

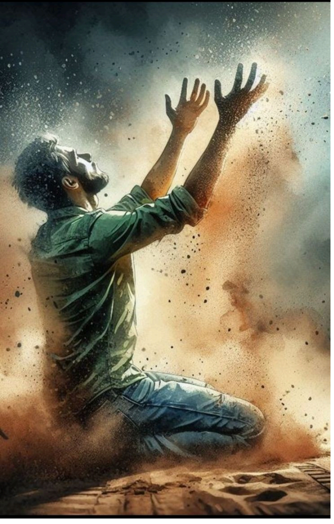

बहुत दु:खी हो जाते हैं तब बुलाते हैं। इस समय तुम बच्चों को शिवबाबा पढ़ा रहे हैं।

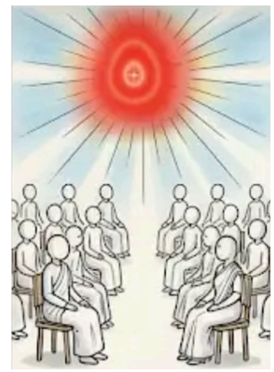

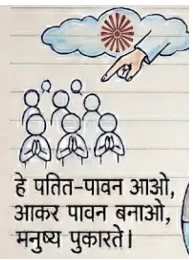

कोई पूछते कि यह कैसे मानें कि परमात्मा आते हैं! तो उन्हों को समझाना है कि "सब पुकारते हैं - हे पतित-पावन आओ। अब वह है निराकार। उनको अपना शरीर नहीं है, आना भी है पतित दुनिया में। पावन दुनिया में तो नहीं आयेंगे।" ऐसे समझाना चाहिए। यह भी समझाना है कि परमात्मा इतना छोटा है जैसे आत्मा छोटी है, परन्तु वह है मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, नॉलेजफुल। बाप कहते हैं कि तुम मुझे परमपिता परमात्मा कहते हो। पुकारते हो तो जरूर आयेंगे ना। गायन भी है कि दूरदेश का रहने वाला आया देश पराये। अभी बाप द्वारा मालूम पड़ा है कि अभी हम पराये देश अर्थात् रावण के देश में हैं। v/s सतयुग त्रेता में हम ईश्वरीय देश अर्थात् अपने देश में थे फिर द्वापर से लेकर हम पराये देश, पराये राज्य में आ जाते हैं। वाम

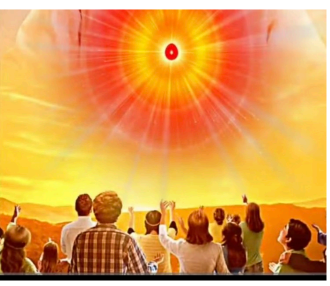

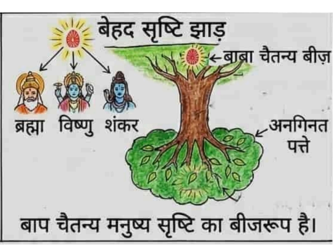

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्॥
हे अर्जुन! तू सम्पूर्ण भूतोंका सनातन बीज मुझको ही जान। मैं बुद्धिमानोंकी बुद्धि और तेजस्वियोंका तेज हूँ॥ १०॥ अध्याय-7
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ॥
हे भरतश्रेष्ठ! मैं बलवानोंका आसक्ति और कामनाओंसे रहित बल अर्थात् सामर्थ्य हूँ और सब भूतोंमें धर्मके अनुकूल अर्थात् शास्त्रके अनुकूल काम हूँ॥ ११॥

Expelled From Heaven

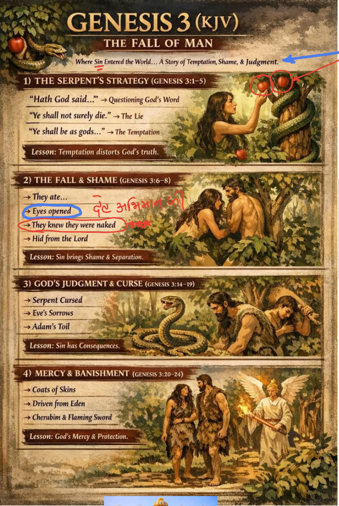

sin [Lust] काम विकार

मार्ग में आ जाते हैं। फिर भक्ति शुरू हो जाती है। पहले-पहले शिवबाबा की भक्ति करने लग जाते हैं, वे लोग शिव का इतना बड़ा लिंग बनाते हैं, परन्तु इतना बड़ा तो वह है नहीं। अभी तुमने समझा है कि आत्मा और परमात्मा में क्या फ़र्क है। वह नॉलेजफुल सदा पावन, सुख का सागर, आनंद का सागर है। यह परम आत्मा की महिमा है ना। अब बुलाते हैं कि हे पतित-पावन आओ। वह है परमपिता जो कल्प-कल्प आते हैं। दूरदेश के रहने वाले मुसाफिर को बुलाते हैं, उनकी महिमा गाते हैं। ब्रह्मा, सरस्वती को तो बुलाते नहीं हैं। पुकारते हैं निराकार परमात्मा को। आत्मा बुलाती है कि दूरदेश के रहने वाले अब आओ देश पराये क्योंकि सब पतित बन चुके हैं। मैं भी आऊंगा तब, जब रावण राज्य खत्म होना होगा। मैं आता भी हूँ - संगम युगे। यह किसको भी पता नहीं है। कहते भी हैं कि वह परम आत्मा, बिन्दी है। आजकल फिर कहते हैं आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा। आत्मा सो परमात्मा हो न सके। आत्मा परमात्मा दोनों अलग-अलग हैं। रूप दोनों का एक

shivbaba की महिमा

But we know, How Lucky & Great we are..!

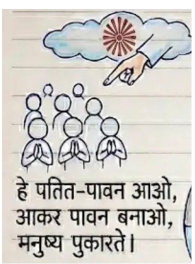

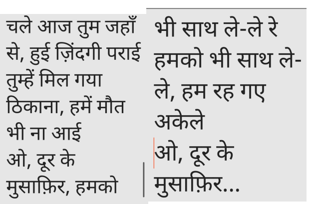
चले आज तुम जहाँ से, हुई ज़िंदगी पराई तुम्हें मिल गया ठिकाना, हमें मौत भी ना आई ओ, दूर के मुसाफ़िर, हमको भी साथ ले-ले रे हमको भी साथ ले-ले, हम रह गए अकेले ओ, दूर के मुसाफ़िर...

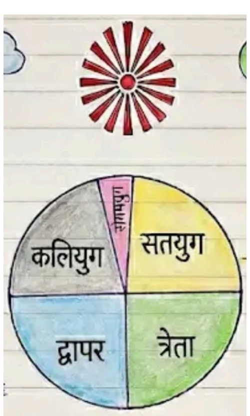

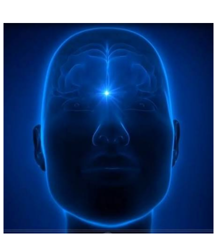

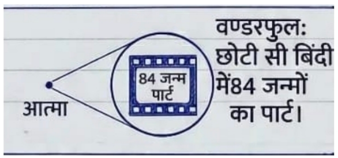

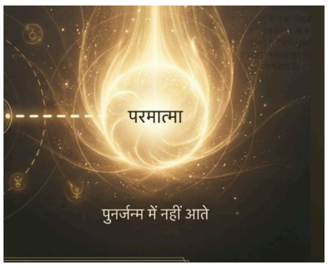

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वत: ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥
हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं—इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे* जान लेता है, वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको प्राप्त नहीं होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

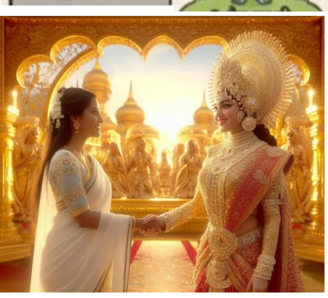

जैसा है। परन्तु आत्मा पतित बनती है, 84 जन्मों का पार्ट बजाना पड़ता है। परमात्मा जन्म मरण रहित है। अगर आत्मा सो परमात्मा कहते तो क्या सतोप्रधान परमात्मा, तमोप्रधान में आते हैं। नहीं, यह तो हो न सके। बाप कहते हैं कि मैं आता हूँ, सर्व आत्माओं की सर्विस करने। मेरा जन्म भी नहीं कहा जाता। मैं आता ही हूँ नर्कवासियों को स्वर्गवासी बनाने। पराये देश में आये हैं, अपना स्वर्ग स्थापन करने। बाप ही आकर हमको स्वर्ग का लायक बनाते हैं। यह भी समझाया है कि और आत्माओं का पार्ट अपना-अपना है। परमात्मा जन्म-मरण रहित है। आते भी जरूर हैं तब तो शिवरात्रि मनाते हैं। लेकिन वह कब आये, यह कोई नहीं जानते। ऐसे ही शिवजयन्ती मनाते आये हैं। जरूर संगम पर आये होंगे, स्वर्ग स्थापन करने। पतितों को पावन बनाने जरूर संगम पर आयेंगे ना। पावन सृष्टि है स्वर्ग। कहते हैं पतित-पावन आओ। फिर जरूर पतित दुनिया के विनाश का समय होगा, तब ही पावन दुनिया स्थापन करेंगे। युगे-युगे तो नहीं आते। बाप कहते हैं - मुझे संगम

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

पर ही आकर पतित दुनिया को पावन बनाना है। यह पराया देश है, रावण का देश। परन्तु यह कोई मनुष्य थोड़ेही जानते कि रावण का राज्य चल रहा है। कब से यह रावण राज्य शुरू हुआ, कुछ भी पता नहीं। पहली-पहली मुख्य बात आत्मा और परमात्मा का राज़ समझाना है, फिर समझाना है कि वह कल्प के संगमयुग पर आते हैं पावन बनाने।

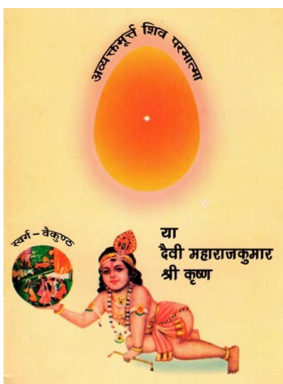

Exclusive Authority of Shiv baba

यह काम उनका ही है, न कि श्रीकृष्ण का। श्रीकृष्ण तो खुद ही 84 जन्म ले नीचे उतरते हैं। सूर्यवंशी सब नीचे उतरते हैं। झाड़ आधा ताजा, आधा पुराना थोड़ेही होगा। जड़जड़ीभूत अवस्था सबकी होती है। कल्प की आयु का भी मनुष्यों को पता नहीं है। शास्त्रों में लम्बी चौड़ी आयु दे दी है। यह बाप ही बैठ समझाते हैं। इसमें और प्रश्न उठ न सके। रचता बाप सच ही बोलते हैं। हम इतने बी.के. हैं, सब मानते हैं। तो जरूर है तब तो मानते हैं।

imp to understand

आगे चल जब निश्चय होगा तो समझ में भी आ जायेगा। पहले-पहले मनुष्यों को यह समझाना है कि परमपिता परमात्मा निराकार दूरदेश से आये हैं। परन्तु किस शरीर में आये? सूक्ष्मवतन में

Coming soon...

आकर क्या करेंगे? जरूर यहाँ आना पड़े। प्रजापिता ब्रह्मा भी यहाँ चाहिए। ब्रह्मा कौन है, यह भी बाप बैठ समझाते हैं। जिसमें प्रवेश किया है वह अपने जन्मों को नहीं जानते थे तो बच्चे भी नहीं जानते थे। बच्चे भी तब बनते जब मैं एडॉप्ट करता हूँ। मैं इन (साकार) सहित बच्चों को समझाता हूँ कि क्या तुम अपने जन्मों को भूल गये हो। अभी सृष्टि का चक्र पूरा होता है फिर रिपीट होगा। मैं आया हूँ पावन बनाने के लिए, राजयोग सिखाने। पावन बनने का और कोई रास्ता नहीं है। अगर यह राज़ मनुष्य जानते तो गंगा आदि पर स्नान करने, मेले आदि पर जाते नहीं। इन पानी की नदियों में तो सदैव स्नान करते रहते हैं। द्वापर से लेकर करते आये हैं। समझते हैं कि गंगा में डुबकी मारने से पाप नाश होंगे। परन्तु कोई के भी पाप नाश नहीं होते हैं। पहले-पहले तो आत्मा और परमात्मा का ही राज़ बताओ। आत्मायें ही परमात्मा बाप को पुकारती हैं, वह निराकार है, आत्मा भी निराकार है। इन आरगन्स द्वारा आत्मा पुकारती है। भक्ति के बाद भगवान को आना है,

श्रीभगवानुवाच Adhyay : 4

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप॥

श्रीभगवान् बोले—हे परंतप अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत-से जन्म हो चुके हैं। उन सबको तू नहीं जानता, किन्तु मैं जानता हूँ॥ ५॥

One & Only way

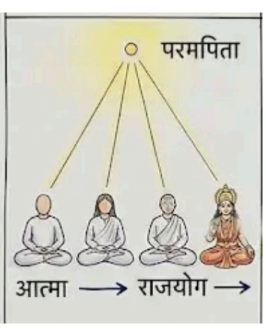

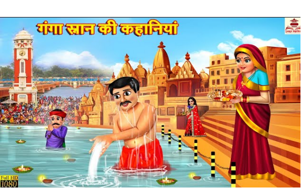

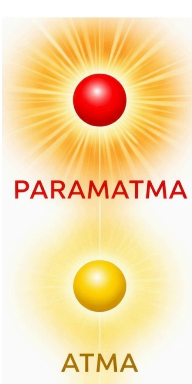

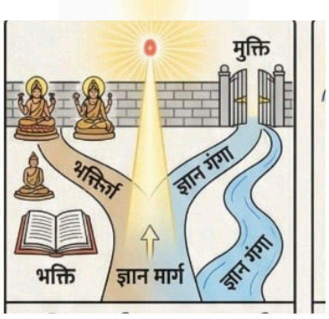

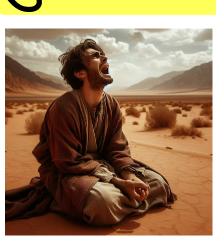

ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

यह भी ड्रामा में पार्ट है।

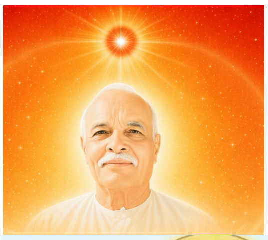

बाप कहते हैं - मुझे नई दुनिया स्थापन करने आना पड़ता है। शास्त्रों में भी है कि भगवान को संकल्प उठा तो जरूर ड्रामा प्लैन अनुसार संकल्प उठा होगा। आगे इन बातों को थोड़ेही समझते थे। दिन-प्रतिदिन समझते जाते हैं। बाप कहते हैं - मैं तुमको नई-नई गुह्य ते गुह्य बातें सुनाता हूँ। सुनते-सुनते समझते जाते हैं। आगे ऐसे नहीं कहते थे कि शिवबाबा पढ़ाते हैं। अब तो अच्छी रीति समझ गये हैं, और भी समझने का बहुत पड़ा है। रोज़ समझाते रहते हैं कि कैसे किसको समझाना चाहिए। पहले यह निश्चय करें कि बेहद का बाप समझाते हैं तो वह जरूर सत्य बतायेंगे। इसमें मूँझने की भी बात नहीं। बच्चे कोई पक्के हैं, कोई कच्चे हैं। कच्चा है तो कोई को समझा नहीं सकते हैं। यह तो स्कूल में भी नम्बरवार होते हैं। बहुतों को यह संशय पड़ता है कि हम कैसे समझें कि

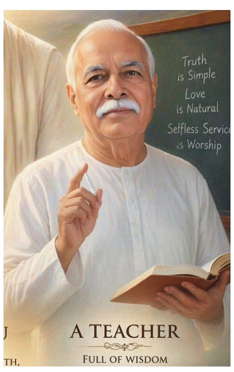

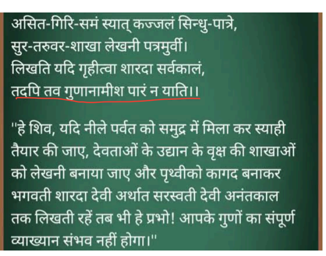
असित-गिरि-समं स्यात् कज्जलं सिन्धु-पात्रे,
सुर-तरुवर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।

"हे शिव, यदि नीले पर्वत को समुद्र में मिला कर स्याही तैयार की जाए, देवताओं के उद्यान के वृक्ष की शाखाओं को लेखनी बनाया जाए और पृथ्वीको कागद बनाकर भगवती शारदा देवी अर्थात सरस्वती देवी अनंतकाल तक लिखती रहें तब भी हे प्रभो! आपके गुणों का संपूर्ण व्याख्यान संभव नहीं होगा।"

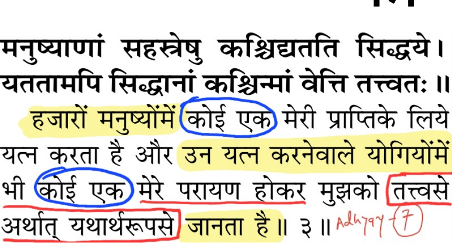
मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वत: ॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३ ॥ Adhyay-7

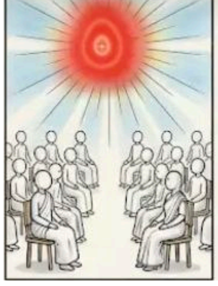

25-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

परमपिता परमात्मा आकर पढ़ाते हैं क्योंकि उन्हों की बुद्धि में है श्रीकृष्ण ने ज्ञान सुनाया। अब पतित दुनिया में तो श्रीकृष्ण आ नहीं सकता। यह उनको सिद्ध करो कि परमात्मा को ही आना पड़ता है, पतित दुनिया और पतित शरीर में। बाप यह भी

"मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना यानि जितने मनुष्य उतने विचार"

समझते हैं कि हर एक की अपनी-अपनी बुद्धि है। कोई तो झट समझ जाते हैं। जितना हो सके समझाना है। ब्राह्मण सब एक जैसे नहीं होते हैं।

परन्तु देह-अभिमान बच्चों में बहुत है। यह बाबा भी जानते हैं कि नम्बरवार हैं। डायरेक्शन पर बच्चों को चलना पड़े। बड़ा बाबा जो कहे, वह

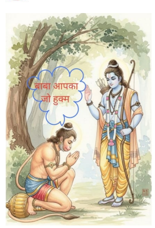

मानना चाहिए। गुरूओं आदि की तो मानते आये हो। अब बाप जो स्वर्ग में ले जाने वाला है, उनकी

Note it down

Point for Life time

बात तो आंख बंद कर माननी चाहिए। परन्तु ऐसे निश्चयबुद्धि हैं नहीं। भल उसमें नुकसान हो वा फायदा हो, मान लेना चाहिए। भल समझो नुकसान भी हो जाए। फिर भी बाबा कहते हैं ना - हमेशा ऐसे समझो कि शिवबाबा ही कहते हैं, ब्रह्मा के लिए मत समझो। रेसपान्सिबुल शिवबाबा होगा। उनका यह रथ है, वह ठीक कर देंगे। कहेंगे

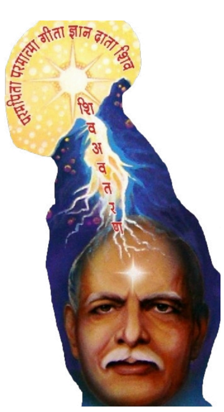

कि मैं बैठा हूँ। हमेशा समझो कि शिवबाबा ही कहते हैं, यह कुछ नहीं जानते। ऐसे ही समझो। एक तरफ तो निश्चय रखना चाहिए, शिवबाबा कहते मेरा मानते रहो तो तुम्हारा कल्याण होता रहेगा। यह ब्रह्मा भी अगर कुछ कहते हैं, तो उनका भी रेसपान्सिबुल मैं हूँ। तुम बच्चे फिकर नहीं करो। शिवबाबा को याद करने से अवस्था और ही पक्की हो जायेगी। निश्चय में विकर्म भी विनाश होंगे, बल भी मिलेगा। जितना बाबा को याद करेंगे उतना बल जास्ती मिलेगा। जो श्रीमत पर चल सर्विस करते हैं वही ऊंच पद पायेंगे। बहुतों में देह-अभिमान बहुत रहता है। बाबा देखो सब बच्चों से कैसे प्यार से चलता है। सबसे बात करते रहते हैं। बच्चों से पूछते हैं कि ठीक बैठे हो! कोई तकलीफ तो नहीं है! लव होता है बच्चों के लिए। बेहद के बाप को बच्चों के लिए बहुत-बहुत लव है। जो जितनी श्रीमत पर सर्विस करते हैं उस अनुसार लव रहता है। सर्विस में ही फायदा है। सर्विस में हडिड्याँ देनी हैं। कोई भी काम करते रहेंगे तो वह फिर दिल पर भी रहते हैं कि यह बच्चा फर्स्टक्लास

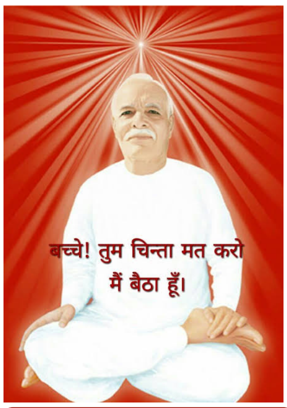

Point of the day

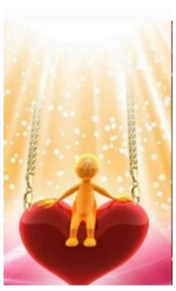

Follow Father

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

है। परन्तु चलते-चलते किसी पर ग्रहचारी भी बैठती है। माया का सामना होता है ना। ग्रहचारी के कारण फिर ज्ञान उठा नहीं सकते। कई तो फिर कर्मणा सेवा अथक होकर करते हैं।

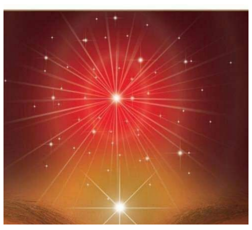

तुम्हारा काम है सबको सुखधाम का मालिक बनाना। किसको दु:ख नहीं देना। ज्ञान नहीं है तो फिर बहुत दु:ख देते हैं। फिर कितना भी समझाओ तो समझते नहीं। पहले-पहले समझानी देनी है आत्मा और परमात्मा की। कैसे आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है, जो अविनाशी पार्ट है। कभी बदलने का नहीं है, ड्रामा में नूँधा हुआ है। यह निश्चय वाला कभी हिलेगा नहीं। बहुत हिल जाते हैं। पिछाड़ी में जब भंभोर को आग लगेगी तब अचल बन जायेंगे। अभी तो बहुत युक्ति से समझाना है। अच्छे-अच्छे बच्चे तो सर्विस पर रहते हैं। दिल पर चढ़े रहते हैं। बहुत तीखे जाते रहते हैं। बहुत मेहनत करते हैं। उनको सर्विस का बहुत

Coming soon...

Characteristics of

शौक रहता है। जिनमें जो गुण हैं वह बाबा वर्णन करते हैं। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

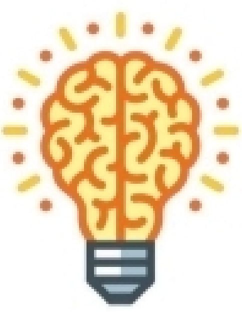

धारणा के लिए मुख्य सार:-

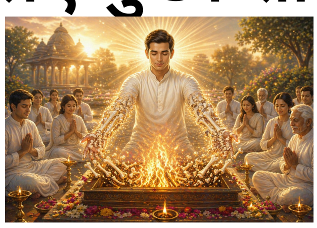

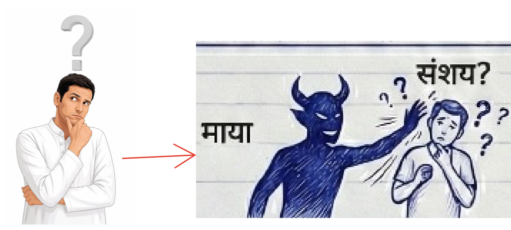

1) सर्विस में हड्डियाँ देनी हैं, किसी भी बात में संशय नहीं उठाना है। सबको सर्विस से सुख देना है, दु:ख नहीं।

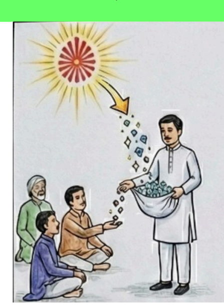

ये तो पक्का कर लो..

2) निश्चय के बल से अपनी अवस्था को अडोल बनाना है। जो श्रीमत मिलती है, उसमें कल्याण समाया हुआ है, क्योंकि रेसपान्सिबुल बाप है इसलिए फिकर नहीं करना है।

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

25-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- योगयुक्त स्थिति द्वारा सूक्ष्म व कड़े बंधनों को क्रास करने वाले बन्धनमुक्त भव

Finale Achievement

योगयुक्त की निशानी है - बन्धनमुक्त।

योगयुक्त बनने में सबसे बड़ा अन्तिम बंधन है -

1- स्वयं को समझदार समझकर श्रीमत को अपने बुद्धि की कमाल समझना अर्थात् श्रीमत में अपनी बुद्धि मिक्स करना, जिसे **बुद्धि का अभिमान** कहा जाता है।

Point for Life time

Note it down

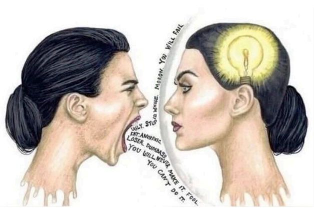

2- जब कभी कोई कमजोरी का इशारा देता है अथवा बुराई करता है - यदि उस समय जरा भी व्यर्थ संकल्प चला तो भी बंधन है। समझा?

Subtle Point to understand

जब इन बंधनों को क्रास कर हार-जीत, निंदा-स्तुति में समान स्थिति बनाओ

तब कहेंगे सम्पूर्ण बन्धनमुक्त।

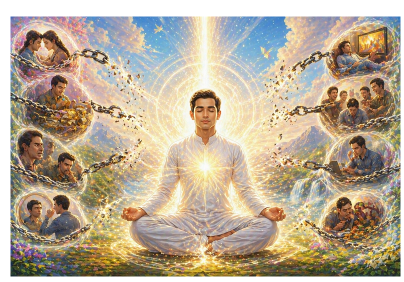

स्लोगन:-पहले सोचना फिर करना - यही ज्ञानी तू आत्मा का गुण है।

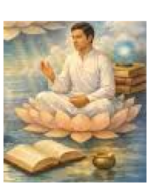

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

बाप समान

ये अव्यक्त इशारे -

महान बनने के लिए

मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

जैसे अन्जान बच्चा नुकसान वाली चीज़ को खिलौना समझता है तो उसे कुछ देकर छुड़ाना पड़ता है,

ऐसे जो अल्पकाल का मान शान वा अल्पकाल की इच्छा रखते हैं, उन्हें मान देकर स्वयं निर्मान बन जाओ।

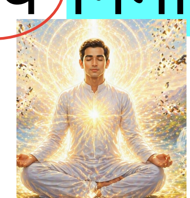

उस समय यदि उन्हें शिक्षा देंगे तो टकराव पैदा होगा इसलिए ऐसे समय पर युक्तियुक्त चलन से, परोपकारी बन क्षमा भाव से सम्मान देकर

पहले उन्हें समझदार बनाओ, जिससे वह स्वयं महसूस करे कि यह बात नुकसानकारक है।

Entire Avyakt Ishara is **Subtle Psychology**

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

From Avyakt
Murli dtd :- 12/04/2026

Again & Again

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में

What is difference between

All Vardan of March'26

Click

All अव्यक्त इशारे of March'26

Click

इसके द्वारा आप बीच में जब भी समय मिले तो Revise करना स्मृति स्वरूप बन जाओ

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।
AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

भक्ति मार्ग में हनुमानजी की इतनी महिमा क्यों है?

क्योंकि उन्होंने अपनी बुद्धि को कहीं पर चलाया नहीं व भगवान के सामने कभी कोई भी तर्क नहीं दिया और जो राम ने कहा उसको As it is करके दिखाया इसलिए तो भक्त लोग हनुमान चालीसा/महिमा के पहले ही दोहे में ये स्पष्ट कर देते है कि हे हनुमान जी ये सारी महिमा आपकी तब ही है जब आप अपनी बुद्धि को श्री राम के सामने नहीं चलाते...
(बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवनकुमार ।) हे हनुमानजी, हम आपको (राम के सम्मुख) बुद्धि हीन जानकर पुकार रहे हैं...क्योंकि श्री राम के आगे आपने कभी भी अपनी बुद्धि नहीं चलाई और जो भी श्री राम ने कहा उसको हाँ जी कहकर As it is follow किया (नहीं तो किसीको बुद्धिहीन कहना तो जैसे उसकी insult है लेकिन दुनियवी रीति की वही insult हनुमान के लिए सभी शक्तियों और महिमा का स्त्रोत है।)

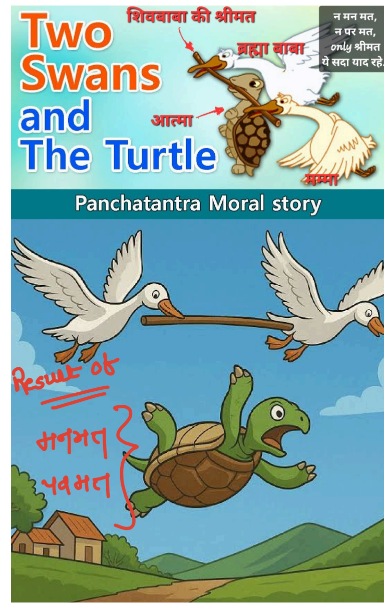

भगवान के सम्मुख बुद्धि को नहीं चलाना ये ही सबसे बड़ी बुद्धिमानी है । ये पक्का समझ लो..

फिर उनकी महिमा जो भी है _जय हनुमान ज्ञान गुण सागर, जय कपीस तिहुं लोक उजागर_ शुरू करते है...

तो सबसे ऊंचा समर्पण मन-बुद्धि-संस्कारो का है। बाप दादा जो कहे *वो ही* करना है,
अगर भरी दोपहरी धूप में बापदादा कहे की "ये रात है" तो हमारे लिए भी रात है, एक संकल्प मात्र भी कुछ और न चले। क्योंकि माया के चक्रव्यूह को समझने के लिए हम असमर्थ है और वो सर्वशक्तिमान, मायापति सभी चक्रव्यूह को जानते है और चक्रव्यूह से निकलने का रास्ता छुपा है बापदादा की श्रीमत में, तो वो जो भी कहेंगे उसमें हमारा कल्याण निश्चित ही समाया हुआ है।

भगवान के सामने कोई भी तर्क नहीं देना है...
वो जो कहे उसमें हाँ बाबा, हाजीर बाबा, अभी बाबा...
That's All

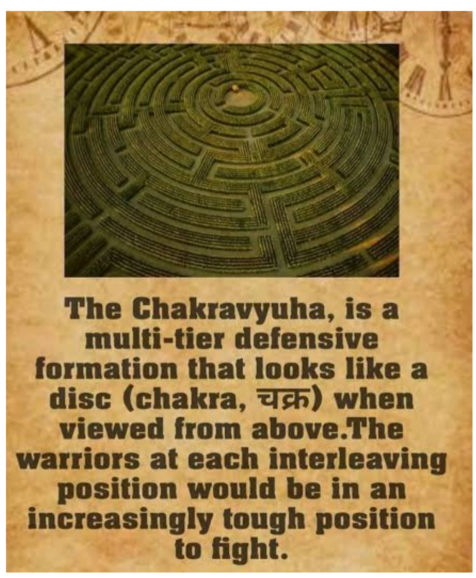

हाँ बाबा, हाजीर बाबा, अभी बाबा...

प्रसंग: जब हनुमानजी लंका से लौटकर रामजी को सीताजी का समाचार देते हैं, तब प्रभु प्रेम से उन्हें उठाने के लिए अपना हाथ उनके सिर पर रखते हैं।

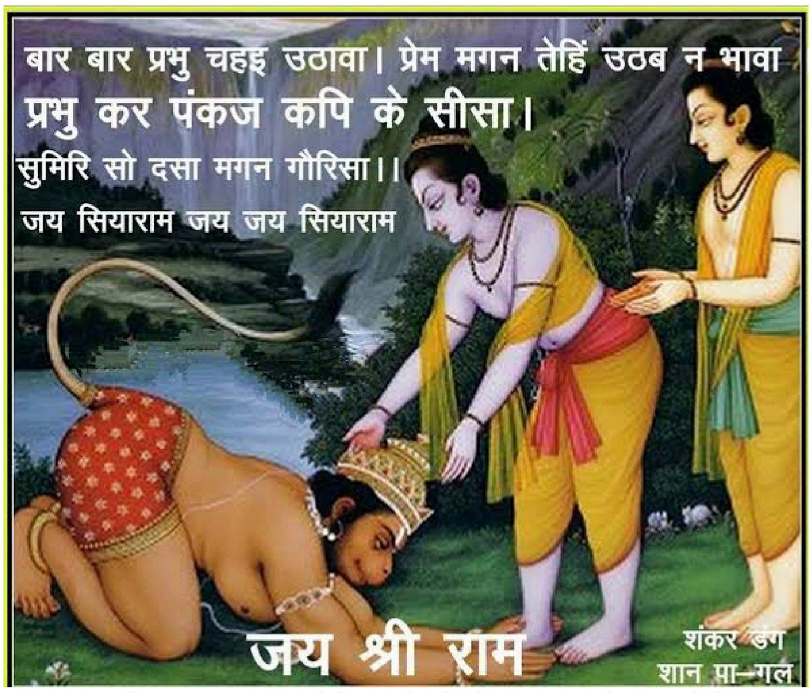

प्रभु उनको बार-बार उठाना चाहते हैं, परंतु प्रेम में डूबे हुए हनुमान जी को चरणों से उठना सुहाता नहीं। प्रभु का करकमल हनुमान जी के सिर पर है। उस स्थिति का स्मरण करके शंकरजी प्रेममग्न हो गए॥1॥

सावधान मन करि पुनि संकर। लागे कहन कथा अति सुंदर॥
कपि उठाई प्रभु हृदयँ लगावा। कर गहि परम निकट बैठावा॥2॥
भावार्थ
फिर मन को सावधान करके शंकरजी अत्यंत सुंदर कथा कहने लगे- हनुमान जी को उठाकर प्रभु ने हृदय से लगाया और हाथ पकड़कर अत्यंत निकट बैठा लिया॥2॥

कहु कपि रावन पालित लंका। केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना। बोला बचन बिगत अभिमाना॥3॥
भावार्थ
हे हनुमान! बताओ तो, रावण के द्वारा सुरक्षित लंका और उसके बड़े बाँके किले को तुमने किस तरह जलाया? हनुमान जी ने प्रभु को प्रसन्न जाना और वे अभिमानरहित वचन बोले- ॥3॥

साखामग कै बड़ि मनुसाई। साखा तें साखा पर जाई॥
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा। निसिचर गन बधि बिपिन उजारा॥4॥
भावार्थ
बंदर का बस, यही बड़ा पुरुषार्थ है कि वह एक डाल से दूसरी डाल पर चला जाता है। मैंने जो समुद्र लाँघकर सोने का नगर जलाया और राक्षसगण को मारकर अशोक वन को उजाड़ डाला,॥4॥

सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछू मोरि प्रभुताई॥5॥
भावार्थ
यह सब तो हे श्री रघुनाथजी! आप ही का प्रताप है। हे नाथ! इसमें मेरी प्रभुता (बड़ाई) कुछ भी नहीं है॥5॥

ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल।
तव प्रभावँ बड़वानलहि जारि सकइ खलु तूल॥33॥
भावार्थ
हे प्रभु! जिस पर आप प्रसन्न हों, उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। आपके प्रभाव से रूई (जो स्वयं बहुत जल्दी जल जाने वाली वस्तु है) बड़वानल को निश्चय ही जला सकती है (अर्थात् असंभव भी संभव हो सकता है)॥33॥

विनम्रता/निमित्त भाव का सबसे श्रेष्ठ उदाहरण